महापुरुष श्री कृष्ण

वासुदेव शरण अग्रवाल

लेखक परिचय – पुरातत्ववेत्ता एवं इतिहासकार डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल का जन्म सन् 1904 ई. में हुआ था । लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए. करने के पश्चात् सन् 1941 में उन्होंने पी-एच.डी. तथा 1946 में डी.लिट की उपाधि प्राप्त की। आपने भारतीय पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष पद का कार्य बड़ी निष्ठा और लगन से सफलता पूर्वक सँभाला। सन् 1951 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कॉलेज ऑफ इन्डोलॉजी में प्रोफेसर नियुक्त हुए। आपका निधन 27 जुलाई सन् 1966 ई. को हुआ।

आपकी प्रमुख रचनाएँ – 'उरज्योति', 'कला और संस्कृति', 'कल्पवृक्ष', 'मलिक मुहम्मद जायसी: पद्मावत' 'पाणिनि कालीन भारत वर्ष', 'पृथ्वीपुत्र', 'भारत की मौलिक एकता', 'भारत सावित्री', 'माता भूमि' एवं 'हर्षचरित एक सांस्कृतिक अध्ययन' हैं। आपने कालिदास के 'मेघदूत' एवं बाणभट्ट के 'हर्षचरित' की नवीन पीठिका प्रस्तुत की है। भारतीय साहित्य और संस्कृति के गंभीर अध्येता के रुप में आप प्रसिद्ध हैं।

डॉ. अग्रवाल हिन्दी के प्रतिभाशाली और विचारशील निबंधकार हैं। साहित्य, संस्कृति, जनपदीय एवं प्राचीन साहित्य पर गंभीर एवं श्रेष्ठ निबंध लिखें हैं। इन रचनाओं की भाषा प्रौढ़ एवं मँजी हुई है। भाषा तत्सम प्रधान संस्कृतनिष्ठ है। भाषा में मुहावरों के प्रयोग के कारण लाक्षणिकता आ गई है। इतिहास एवं पुरातत्व सम्बन्धी जानकारी आपके निबंधों में दिखाई देती है। रचनाओं में भाषा के मानक रूप के दर्शन होते हैं। निबंध प्राय: विवरणात्मक एवं कथात्मक शैली में होते हैं तो वाक्य विन्यास समास शैली में होते हैं। इनका हिन्दी पर पूर्ण अधिकार सर्वत्र दिखाई देता है। स्पष्टता, बोधगम्यता एवं प्रभावोत्पादकता आपके निबंधों को विशेष आकर्षक बनाते हैं।

केन्द्रीय भाव

प्रस्तुत पाठ में श्रीकृष्ण के महान व्यक्तित्व का भव्य रूप अंकित किया गया है। श्री कृष्ण के जीवन के प्रत्येक पक्ष से हमें प्रेरणा मिलती है। एक ओर रास रचाने और मुरली बजाने वाले कन्हैया और दूसरी ओर महाभारत युद्ध का संचालन और गीता का उपदेश देने वाले श्रीकृष्ण का समन्वय बेजोड़ है। कला, राजनीति, युद्ध, धर्म, दर्शन आदि में से प्रत्येक में श्रीकृष्ण पारंगत थे। इसीलिए उनका प्रभाव युग-युगान्तरों तक व्याप्त है। श्री कृष्ण में सोलह कलाओं की अभिव्यक्ति थी अर्थात मानवीय आत्मा का पूर्णतम विकास उनमें हमें आत्मिक विकास के हर एक स्वरूप का दर्शन होता है। यही है पुरुषोतम स्वरूप जो हमारे लिए मानदण्ड है, आदर्श है।

महापुरुष श्रीकृष्ण

भारतवर्ष के जिन महापुरुषों का मानव-जाति के विचारों पर स्थायी प्रभाव पड़ता है, उनमें श्रीकृष्ण का स्थान प्रमुख है। आज से लगभग पाँच सहस्र वर्ष पूर्व एक ही समय में ऐसे दो व्यक्तियों का जन्म हुआ जिनके उदात्त मस्तिष्क की छाप हमारे राष्ट्रीय जीवन पर बहुत गहरी पड़ी है। संयोग से उन दोनों का नाम कृष्ण था। समकालीन इतिहास-लेखकों ने दोनों को भेद करने के लिए एक को 'द्वैपायन कृष्ण' कहा है, जिन्हें आज सारा देश महर्षि वेद व्यास के नाम से जानता है, और जिनके मस्तिष्क की अप्रतिहत प्रतिभा से आज तक हमारे धार्मिक जीवन और विश्वासों का प्रत्येक अंग प्रभावित है। दूसरे देवकी-पुत्र श्रीकृष्ण थे, जिन्हें अब वास्तव में केवल 'कृष्ण' के नाम से पुकारते हैं। कृष्ण की बाल-लीलाओं के मनोरम आख्यान, उनके गीता-शास्त्र के महान् उपदेश तथा महाभारत के युद्ध में उनके विविध

आर्योचित कर्मों की कथाएँ आज घर-घर में प्रचलित हैं। असंख्य मनुष्यों का जीवन आज कृष्ण के आदर्श से प्रभावित होता है। वस्तुतः हमारे साहित्य का एक बड़ा भाग कृष्ण चरित्र से अनुप्राणित हुआ है। कृष्ण के जीवन की घटनाएँ केवल अतीत इतिहास के जिज्ञासुओं के कौतूहल का विषय नहीं है, वरन् वे धार्मिक जीवन की गतिविधि को नियन्त्रित करने के लिए आज भी भारतीय आकाश में चमकते हुए आकाशद्वीप की तरह सुशोभित और जीवित हैं।

अष्टमी, बुधवार, रोहिणी इस प्रकार के तिथि, वार, नक्षत्र-योग में आधी रात के समय अपने मामा कंस के बन्दीगृह में कृष्ण का जन्म हुआ। इसी बात से उस काल के राजनैतिक चक्र का आभास मिल जाता है। जिस व्यक्ति के जन्म के भय से ही उनके माता-पिता की स्वतंत्रता छिन गई हो, क्या आश्चर्य है यदि उनके जीवन का अधिकांश समय देश के राजनैतिक वातावरण को अत्याचार और उत्पीड़न से मुक्त करने में व्यतीत हुआ हो। उस काल के जो भी उच्छृंखल, लोकपीड़क सत्ताधारी थे, उन सब से ही एक-एक करके कृष्ण की टक्कर हुई। जिस महापुरुष ने योग-समाधि के आदर्श को लेकर ब्रह्म-स्थिति प्राप्त करने का उपदेश दिया हो, जिसका अपना जीवन अविचल ज्ञान-निष्ठा का सर्वोत्तम उदाहरण हो, उसके जीवन में कंस-निपात से लेकर निजवंश के विनाश तक की कथा एक अत्यंत करुण कहानी के रूप में पिरोई हुई है।

कृष्ण का बाल-जीवन तो एक काव्य ही है। जन्म से लेकर अथवा उससे पूर्व ही, उनके सम्बन्ध के अतिमानवी चरित्रों का क्रम आरम्भ हो गया था और उनके वृन्दावन छोड़कर मथुरा आने के समय तक ये बाल-लीलाएँ आकाश में एकत्रित होने वाली सुन्दर सुखद मेघमालाओं की भाँति नाना वर्ण और रूपों से संचित होती रहीं। बिना कहे ही उन्हें हम जानते हैं। हमारे देश के बाल-वर्ग के लिए तो उन कथाओं की रसमय सामग्री एक अत्यंत प्रिय वस्तु है। यमुना नदी और उसके समीप के पीलु के विटपों पर लहलहाती हुई लताओं के कुंजों में कृष्ण के बाल-चरित्रों की प्रतिध्वनि आज भी जीवित काव्य-कथाएँ हैं। यहीं पर उन्होंने उस मल्लविद्या का अभ्यास किया जिसके कारण आगे चलकर मुष्टिक और चाणूर-जैसे पहलवान पछाड़े गए। यमुना के कछारों में ही उस संगीत और नृत्य का जन्म हुआ जो हमारी संस्कृति की एक प्रिय वस्तु है। यहीं गौवंश की वृद्धि और प्रतिपालन के वे प्रयत्न किए गए जिनका पुनरुद्धार हमारे कृषि-प्रधान देश के लिए आज भी एक प्राप्तव्य आदर्श के रूप में हमारे सामने हैं।

इन रमणीय बाल-चरित्रों को सुखदायी भूमिका तैयार करने के बाद श्रीकृष्ण ने एक दूसरे ही प्रकार के जगत् में प्रवेश किया। उनका वृन्दावन छोड़कर मथुरा को आना उस जगत् का देहली-द्वार है। यहाँ जीवन के कठोर सत्य उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके द्वार का सबसे पहला परिवर्तन शूरसेन जन-पद की राजनीति में हुआ। उग्रसेन के पुत्र लोक-पीड़क कंस को राज्यच्युत करके कृष्ण ने उग्रसेन को सिंहासन पर प्रतिष्ठित किया। इस समय वह और उनके बड़े भाई बलराम दोनों किशोरावस्था में पदार्पण कर चुके थे। यमुना के तट पर प्रकृति के विश्वविद्यालय में स्वच्छन्द वायु और आकाश के साथ मिलकर ग्वाल-बालों के बीच में उन्होंने जीवन की एक बड़ी तैयारी कर ली थी परन्तु मस्तिष्क की साधना का अवसर अभी तक उन्हें नहीं मिल सका था। इस कमी को पूर्ण करने के लिए वे सान्दीपनि मुनि के गुरुकुल में प्रविष्ट हुए। कुल पुरोहित गर्गाचार्य और काशी के विद्याचार्य सान्दीपनि इन दो नामों का भगवान कृष्ण के साथ बड़ा मधुर सम्बन्ध है। अवश्य ही गीता के प्रवक्ता को अपने ज्ञान का प्रथम बीज आर्ष-ज्ञान-परम्परा की रक्षा करने वाले तपस्वी ब्राह्मणों से ही प्राप्त हुआ था।

जैसे ही सान्दीपनि ने विद्या समाप्त करके कृष्ण को 'सत्यं वद धर्म चर' वाला अपना अन्तिम उपदेश देकर विदा किया, वैसे ही परिस्थिति ने उनका सम्बन्ध हस्तिनापुर की राजनीति से मिला दिया। वासुदेव और उग्रसेन कृष्ण-बलदेव को लेकर कुरुक्षेत्र स्नान के लिए गए हुए थे। यहीं कुन्ती भी पाण्डवों के साथ आई। यहीं कृष्ण और पाण्डवों के बीच

घनिष्ठ सम्बन्ध का सूत्रपात हुआ जिसके कारण आज तक हम योगेश्वर कृष्ण और धनुर्धर पार्थ का एक साथ स्मरण करते हैं। कंस वध के समय ही कृष्ण अपनी राजनीतिक प्रवृत्ति का परिचय दे चुके थे। हस्तिनापुर की राजधानी के साथ सम्पर्क होने के बाद उस प्रवृत्ति की ओर भी उत्तेजना मिली। उन्होंने यह अनुभव किया कि इस देश में एक बड़ा प्रबल संगठन उन राजाओं का है जो भारतीय राजनीति की प्राचीन लोकपक्षीय परम्पराओं के विरुद्ध निरंकुश होकर राजशक्ति का प्रयोग करते हैं; और जिनके कारण प्रजा में क्षोभ और कष्ट है। कृष्ण का बाल-जीवन लोक की गोद में पला था। वे स्वयं निज जाति की अन्धकार वृष्णि शाखा के, जो एक गणराज्य था, सदस्य थे। इसी कारण उनकी सहानुभूति स्वभावत: लोक के साथ थी। जैसे-जैसे कारण उपस्थित होते गए, एक-एक अत्याचारी शासक से उनका संघर्ष हुआ। मगध की राजधानी गिरीब्रज में बली जरासंध का वध कराकर उन्होंने उनके पुत्र सहदेव का अभिषेक किया। महाभारत में लिखा है, उस समय पृथ्वी पर जरासंध का आतंक था, केवल अन्धक, वृष्णि और कुरुवंशियों ने उसकी अधीनता स्वीकार नहीं की थी। इन्हीं दोनों घरानों ने मिलकर उसका अन्त कर दिया। चेदि जनपद में शिशुपाल का एकछत्र शासन था। शिशुपाल दुर्योधन की राजनीति का समर्थक था। दुर्योधन की शक्ति को निर्बल बनाने के लिए जरासंध और शिशुपाल का कण्टक निकालना आवश्यक था। तदनुसार शिशुपाल का वध करके माहिष्मति की गद्दी पर उसके पुत्र धृष्टकेतु को बैठाया। बलिष्ठ पांड्य राज को मल्लयुद्ध में अपने वक्षस्थल की टक्कर से चूर कर डाला। सौभ-नगर में शाल्वराज को वशीभूत किया। सुदूरपूर्व के प्राग्ज्योतिष दुर्ग में भौम नरक का निरंकुश शासन था, जिसने एक सहस्त्र कन्याओं को अपने बन्दीगृह में डाल रखा था। उसकी निर्मोचन नामक राजधानी में सेना सहित मुर और नरक का वध करके कामरूप प्रदेश को स्वतंत्र किया। बाणासुर, कलिंगराज और काशिराज इन सब को कृष्ण से लोहा लेना पड़ा और सब ही उनके बुद्धि-कौशल के आगे परास्त हुए।

कृष्ण की राजनीतिक बुद्धि अद्‌भुत थी। अर्जुन ने कहा था कि युद्ध करने पर भी कृष्ण मन से जिसका अभिनन्दन करें वह सब शत्रुओं पर विजयी होगा। 'यदि मुझे वज्रधारी इन्द्र और कृष्ण में से एक को लेना पड़े तो मैं कृष्ण को लूँगा।' आर्य विष्णुगुप्त चाणक्य को भी अपनी बुद्धि पर ऐसा ही विश्वास था। उनका मंत्र अमोघ था। जहाँ कोई युक्ति न हो, वहाँ कृष्ण की युक्ति काम आती थी। धृतराष्ट्र की धारणा थी कि जब तक एक रथ पर कृष्ण अर्जुन और अधिज्य गाण्डीव धनुष - ये तीन एक साथ हैं, तब तक ग्यारह अक्षौहिणी सेना होने पर भी कौरवों की विजय असम्भव है।

महाभारत का युद्ध भारतीय इतिहास की एक बहुत दारुण घटना है। इस प्रलयकारी युद्ध में दुर्योधन की ओर से गान्धार, वाल्हीक, काम्बोज, कैकय, सिन्धु, मद्र, त्रिगर्त (कांगड़ा, सारस्वतगण, मालव और अंग) आदि देशों के योद्धा प्रवृत्त हुए। युधिष्ठर की ओर से विराट, पांचाल, काशि, चेटि, संजय आदि वंशों के योद्धा युद्ध के लिए आए। ऐसे भयंकर विनाश को रोकने के लिए कृष्ण से जो प्रयत्न हो सकता था, उन्होंने किया। वे पाण्डवों की ओर से समस्त अधिकारों को लेकर सन्धि करने के लिए हस्तिनापुर गए। वहाँ उन्होंने धृतराष्ट्र की सभा में जो तेजस्वी भाषण दिया उसकी ध्वनि आज भी इतिहास में गुंजायमान है। उन्होंने कहा 'कौरवों और पाण्डवों में बिना वीरों का नाश हुए ही शान्ति हो जाए, मैं यही प्रार्थना करने आया हूँ'

धृतराष्ट्र ने कहा - 'हे कृष्ण, मैं समझता हूँ, पर तुम दुर्योधन को समझा सको तो प्रत्यन करो'

कृष्ण ने दुर्योधन से कहा - 'शमेशर्म भवेत्तात' अर्थात ''हे तात ! शांति से ही तुम्हारा और जगत का कल्याण होगा।''

दुर्योधन ने सब कुछ सुनकर कहा - ''कृष्ण ! सुई की नोंक के बराबर भी भूमि पाण्डवों के लिए मैं नहीं छोड़ सकता।'' बस वही युद्ध का अपरिहार्य आह्वान था। देव की इच्छा के सामने भीष्म और द्रोण जैसे नर रत्नों की भी रक्षा न हो सकी।

कृष्ण को हमारे देश के लेखकों ने सोलह कला का अवतार कहा है। इसका तात्पर्य क्या है ? यह स्पष्ट है कि भिन्न भिन्न वस्तु को नापने के लिए भिन्न-भिन्न परिमाणों का प्रयोग किया जाता है। दूरी के नापने के लिए और नाप है, काल के लिए और हैं तथा बोझे के लिए और है। इसी प्रकार मानवी पूर्णता को प्रकट करने के लिए कला की नाप है। सोलह कलाओं से चन्द्रमा का स्वरूप सम्पूर्ण होता है। मानवी आत्मा का पूर्णतम विकास भी सोलह कलाओं के द्वारा प्रकट किया जाता है। कृष्ण में सोलह कलाओं की अभिव्यक्ति थी अर्थात मनुष्य का मस्तिष्क मानवीय विकास का जो पूर्णतम आदर्श बना सकता है, वह हमें कृष्ण में मिलता है। नृत्य, गीत, वादित्र, वाग्मिता, राजनीति,योग, आध्यात्मक ज्ञान सबका एकत्र समवाय कृष्ण में पाया जाता है। गोदोहन से लेकर राजसूय-यज्ञ में पुरोहितों के चरण धोने तक तथा सुदामा की मैत्री से लेकर युद्ध भूमि में गीता के उपदेश तक उनकी ऊँचाई का एक पैमाना है, जिस पर सूर्य की किरणों की रंग-बिरंगी पेटी की तरह हमें आत्मिक विकास के हर एक स्वरूप का दर्शन होता है। कृष्ण भारतवर्ष के लिए एक अमूल्य निधि हैं, वे हमारी राष्ट्रीय संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि हैं। जिस प्रकार पूर्व और पश्चिम के समुद्रों के बीच प्रदेश को व्याप्त करके गिरिराज हिमालय पृथ्वी के मानदण्ड की तरह स्थित है, उसी प्रकार ब्रह्मधर्म और क्षात्रधर्म इन दो मर्यादाओं के बीच की उच्चता को व्याप्त करके श्रीकृष्ण-चरित्र पूर्ण मानवी-विकास के मान-दण्ड की तरह स्थित है।

◆◆◆

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. ''कृष्ण द्वैपायन'' को देश किस नाम से जानता है ?
2. भारतीय साहित्य का एक बड़ा भाग किस चरित्र से अनुप्राणित है ?
3. गीताशास्त्र के महान् उपदेशक कौन हैं ?
4. कृष्ण, बलदेव और कुंती पांडवों के घनिष्ठ सम्बन्धों का सूत्रपात किस स्थान पर हुआ ?
5. कृष्ण ने शिशुपाल का वध कर माहिष्मति की गद्दी पर किसे बैठाया ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. भारतीय राष्ट्रीय जीवन पर किन दो समकालीन व्यक्तियों के उदात्त मस्तिष्क की गहरी छाप है ?
2. महर्षि वेदव्यास क्यों प्रसिद्ध हैं ?
3. श्रीकृष्ण ने एक दूसरे ही प्रकार के जगत में कब प्रवेश किया ?
4. मस्तिष्क - साधना हेतु श्रीकृष्ण कहाँ गए, वहाँ उन्हें क्या लाभ हुआ ?
5. कृष्ण जन्म सम्बन्धी कुछ तथ्य लिखिए ?
6. श्रीकृष्ण हस्तिनापुर क्यों गए ? हस्तिनापुर जाकर कृष्ण ने क्या किया ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. ''श्रीकृष्ण का जीवन तो एक काव्य ही है'' इस उक्ति को सिद्ध कीजिए ।
2. श्रीकृष्ण ने रमणीय बाल-चरित्रों की सुखदायी भूमिका के रूप में कौन-कौन से कार्य किए ?
3. हस्तिनापुर से सम्पर्क के पश्चात् श्रीकृष्ण को जो अनुभव हुआ उसे अपने शब्दों में लिखिए।
4. श्रीकृष्ण के बुद्धिकौशल के आगे कौन-कौन से अराजक व्यक्तित्व परास्त हुए ?
5. ''महाभारत का युद्ध भारतीय इतिहास की एक दारुण घटना है'' इस उक्ति की सार्थकता में अपने विचार प्रकट कीजिए।
6. श्रीकृष्ण को सोलह कलाओं का अवतार क्यों कहा गया है ?

भाषा अध्ययन

ध्यान से पढिए -

वह प्रतिदिन विद्यालय जाता है। जहाँ वह कभी-कभी कार्यदक्ष शिक्षकों से देश-सेवा और समाजोद्धार की बातें सुनता है। वहीं दोपहर में अवकाश मिलने पर चिन्तामुक्त होकर सहपाठियों के साथ खेलता है।

उपर्युक्त रेखांकित शब्दों का विश्लेषण निम्नानुसार किया जा सकता है –

प्रथम पद		दूसरा पद		समस्त पद	अर्थ
प्रति	+	दिन	=	प्रतिदिन	दिन-दिन
कार्य	+	दक्ष	=	कार्यदक्ष	कार्य में दक्ष
देश	+	सेवा	=	देश सेवा	देश की सेवा
दो	+	पहर	=	दोपहर	दो पहरों का समाहार
चिन्ता	+	मुक्त	=	चिंतामुक्त	चिंता से मुक्त

दो या दो से अधिक शब्दों के योग से जब नया शब्द बन जाता है तब उसे सामासिक शब्द और उन शब्दों के योग को समास कहते हैं।

जिन मूलशब्दों के योग से समास बना है उनमें से पहले पद को पूर्व पद तथा दूसरे पद को उत्तर पद कहते हैं। जैसे -कार्यकुशल - कार्य और कुशल दो शब्दों के योग से बना है। इसमें 'कार्य' पूर्वपद 'कुशल' उत्तरपद तथा 'कार्यकुशल' सामासिक शब्द है।

इसे जानिए -

1. समास में कम से कम दो शब्दों या पदों का योग होता है।
2. मिलने वाले पदों की विभक्ति प्रत्यय का लोप हो जाता है।
3. संस्कृत तत्सम के होने पर समास में संधि भी हो सकती है।
   (यथा-शीतोष्ण=शीत+उष्ण (यहाँ अ+उ=ओ हो गया है, अतः सन्धि भी है)
4. समास सजातीय शब्दों का होता है। जैसे-धर्मशाला परन्तु मजहब शाला नहीं होगा। इसमें बहुत से अपवाद भी है, जैसे-बम वर्षा, रेलगाड़ी, स्टेशन अधीक्षक, जिलाधीश, रसोईखाना आदि।
5. समास का विग्रह होता है। सामासिक शब्दों में मिले हुए शब्दों को पृथक करने की प्रक्रिया समास विग्रह कहलाता है।

यह भी जानें -

1 **अव्ययी भाव समास**

इन शब्दों को पढ़िए -

	समास	- प्रथम पद -	द्वितीयपद	विग्रह
१	यथाशक्ति	यथा (अव्यय)	शक्ति (विशेषण)	शक्ति के अनुसार
२	प्रतिदिन -	प्रति (अव्यय)	दिन (संज्ञा)	प्रत्येक दिन
३	भरपेट-	भर (अव्यय)	पेट (संज्ञा)	पेट भर के
४	भरसक-	भर (अव्यय)	सक (क्रिया)	शक्ति भर
५	प्रत्येक-	प्रति (अव्यय)	एक (विशेषण)	एक एक

इन समासिक शब्दों में प्रथमपद प्रधान और अव्यय है उत्तरपद संज्ञा, विशेषण या क्रिया है ।

जिन सामासिक शब्दों में प्रथमपद प्रधान और अव्यय होता है, उत्तर पद संज्ञा, विशेषण या क्रिया विशेषण होता है, वहाँ अव्ययी भाव समास होता है ।

प्रश्न - निम्नलिखित शब्दों का समास विग्रह कीजिए -

देवकी पुत्र, कृष्ण चरित्र, बन्दीगृह, मेघमाला, प्रतिध्वनि

सन्धि और समास में अन्तर -

	सन्धि	समास
1.	सन्धि में दो वर्णों का योग होता है।	समास में दो पदों का योग होता है।
2.	सन्धि में दो वर्णों का मेल और विकार होता है	समास में पदों/शब्दों के प्रत्यय का लोप हो जाता है।
3.	सन्धि को तोड़ना विच्छेद कहलाता है।	समास को तोड़ना विग्रह कहलाता है।

योग्यता विस्तार

1. निबंध के आधार पर कृष्ण युगीन भारतीय राजनीति एवं समाज की जो तस्वीर बनती है। उसे अपने शब्दों में लिखिए ।
2. महापुरुषों के जीवन चरित्र खोजकर पढ़िए और अपने साथियों को सुनाइए।
3. महापुरुषों के चित्रों का एलबम तैयार कीजिए।
4. कृष्ण साहित्य की पुस्तकों को सूची बद्ध कीजिए।
5. सान्दीपनी आश्रम कहाँ स्थित था? उस शहर के बारे में अधिक जानकारी एकत्रित कीजिए।

शब्दार्थ

सहस्त्र = हजार। **अनुप्राणित** = प्रेरित, समर्थित, पोषित। **अतीत** = बीता हुआ। **भेद** = भिन्न, अलग। **जिज्ञासुओं** = जानने की इच्छा रखने वाले। **बन्दीगृह** = कारागार। **अप्रतिहत** = अबाधित (किसी के द्वारा किसी प्रकार से न रुकना)। **मल्लविद्या** = कुश्ती की शिक्षा। **प्रतिभा** = कौशल। **प्रतिध्वनि** = आवाज जो टकराकर पुनः सुनाई दे। **मनोरम** = सुंदर। **लोक पीड़क** = संसार भर को पीड़ा पहुँचाने वाला। **राज्यच्युत** = राज्य से अलग। **बलदेव** = बलराम (कृष्ण के बड़े भाई)। **पार्थ** = अर्जुन। **प्रवृत्ति** = स्वभाव, आदत। **अभिषेक** = तिलक। **अमोघ** = अचूक। **अपरिहार्य** = जिसे त्यागा न जा सके।